International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 21-01-2019; Accepted: 24-02-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 2; March 2019; Page No. 33-35

नयी कविता और अभिनव नाट्य प्रयोग

सीमा मिश्रा

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, राम मूर्ति स्मारक महा विद्यालय, अम्बेडकरनगर, अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या, उत्तर प्रदेश, भारत |

सारांश

हिन्दी नाटकों के विकास का जिस संदर्भ में इस शोध पत्र में विवेचन किया जा रहा है, वह आधुनिक काल की देन है | यद्यपि संस्कृत और अपभ्रंश में नाटकों की रचना हुई है और संस्कृत नाटक तथा नाट्य शास्त्र विश्व साहित्य में चर्चा का विषय रहा है | यहाँ कवि कालिदास की प्रसिद्ध कृति अभिज्ञान शाकुन्तलम तथा भास की प्रतिमा नाटकम, स्वप्न वासवदन्तम, विशाखादत्त का नाटक मुद्राराक्षस शूद्रक का मृच्छकटिकम, तथा भवभूति का उत्तर राम चरितम की चर्चा भी की गई है | इसी के साथ समसामयिक घटनाओ के प्रभाव में सृजित नयी कविता काव्य धारा का नाट्य विधा के विकास पर पड़ने वाले असर का विश्लेषण किया गया है |

मूल शब्द : हिन्दी नाटकों, नाट्य शास्त्र, कविता |

1. प्रस्तावना

हिन्दी नाटक मुख्यतः भारतेन्दु युग की देन है| भारतेन्दु युग से पूर्व भी नाट्य सर्जना का उल्लेख मिलता है| 'रुकिमणि हरण' 'हनुमन्नाटक' प्रबोध चंद्रोदय तथा माधवानन्द कामकन्दला भारतेन्दु युग से पूर्व की नाट्य कृतियाँ है | भारतेन्दु युग में नाट्य सर्जना का प्रारम्भ संस्कृत तथा अंग्रेजी नाटकों के अनुवाद से होता है | धंनजयविजय, पाखण्ड विडम्बन. कर्पूरमंजरी तथा विघासुंदर प्रसिद्ध अनुदित नाट्य कृतियाँ हैं | भारतेन्दु युग के साहित्यकार लाला सीताराम ने भवभूमि और कालिदास के सभी नाटकों का अनुवाद किया है | भारतेन्दु की प्रसिद्ध नाट्य कृतियाँ प्रेमजोगिनी (1877), चन्द्रावली नाटिका (1877), भारत दुर्दशा, नीलदेवी अंधेरनगरी, सत्य हरिश्चन्द्र इसी काल खण्ड में रची गयीं | लाला श्री निवासदास ने 'रणधीर प्रेम मोहिनी' की रचना की है | राधाकृष्ण दास के वेणुसंहार, राधा चरण गोस्वामी का नाटक 'सटी चन्द्रवली' तथा अमर सिंह राठौर प्रसिद्ध हैं | इस युग के रचनाकार बालकृष्ण भट्ट, प्रताप नारायण मिश्र, लाला श्री निवासदास आदि ने नाट्य सर्जना द्वारा पौराणिक कथा वस्तु के अतिरिक्त इतिहास की घटनाओं को नाटक का विषय बनाया | नये नाट्य प्रयोगों के दृष्टी से अंधेर नगरी और भारतदुर्दशा तो ऐसी प्रसिद्ध नाट्य कृतियाँ है जिनसे राष्ट्रीय चेतना और आधुनिकता का विकास हुआ है | हिन्दी नाटकों के विकास का दूसरा चरण स्वछंदतावादी प्रवृत्तियों से युक्त है | हिन्दी नाटकों के क्षेत्र में प्रसाद का योगदान एक नये युग का परिचायक है | भारतीय इतिहास के गौरवपूर्ण अंश को कथावस्तु का आधार बनाकर प्रसादजी ने 'राज्य श्री', 'ध्रुवस्वामिनी', 'स्कन्दगुप्त', 'चन्द्रगुप्त', 'अजातशत्रु' आदि की सर्जना की है | इन नाटकों में पहली बार स्वछंदतावादी चेतना का विकास हुआ है जिसे कुछ समीक्षक पश्चिम का प्रभाव मानते हैं | डॉ. रामेश्वर लाल खंडेलवाल ने कहा है कि- 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने नाट्य लेखन का प्रारंभ किया था किन्तु उसका बहुमुखी विकास प्रसाद युग में ही हुआ | भारतेन्दु युग के होने वाले अनुवादों और सामाजिक समस्याओं की सीमा को लांघकर भारतीय इतिहास के स्वर्णीय पृष्ठों से कथावस्तु ग्रहण कर उससे तत्कालीन समस्याओं की समायोचित व्याख्या तथा रोमांटिक गीतों से युक्त नाटकों की नवीन शैली का सूत्रपात जयशंकर प्रसाद ने किया |'[1] लक्ष्मी नारायण मिश्र ने 'सन्यासी' राक्षस का मंदिर आदि नाट्य कृतियों के द्वारा समस्या नाटक का श्री गणेश किया जिसे सभी आलोचकों ने 'यथार्थवादी नाटक' कहा है | उदय शंकर भट्ट, हरिकृष्ण प्रेमी, जगदीश चन्द्र माथुर आदि नाटककारो ने नाटकीय रचना को आगे बढ़ाते हुए विविध नाट्य शैलियों के प्रयोग किए हैं | तार सप्तक के प्रकाशन काल से नाट्य सर्जना के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ जिसके कारण स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटकों में नयी चेतना का विकास हुआ है | स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटकों के लेखन काल में प्रगतिशीलता, प्रयोगवादी विचारधारा तथा नयी कविता के माध्यम से जो नये प्रयोग हुए उनका प्रभाव नयी कहानी, नये उपन्यास नई समीक्षा तथा नये नाटकों पर भी पड़ा है |

२. नाट्य विधा की विकास गाथा

नाट्य सर्जना में प्रमुख महत्व कथावस्तु को दिया जाना चाहिए– अथवा पात्र कल्पना को, यह एक समीचीन प्रश्न है | नये नाटकों में समाजिक समस्याओं की प्रधानता के कारण पात्र पौराणिक और ऐतिहासिक नहीं होते और न किसी राजा अथवा सेनापति का वर्णन होता है | स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटकों में औसत आदमी को ही पात्र रूप में परिकल्पित किया गया है जो अपने समय के घात-प्रतिघातों को झेलते हुए जीवन की समस्याओं से मुठभेड़ करते हुए आगे बढ़ता है | मार्क्सवादी चेतना के प्रभाव से शोषक के प्रति विरोध, दलितों शोषितों तथा उपेक्षितों और उपेक्षिताओ के प्रति विशेष सहानुभूति विघमान है |

नवलेखन (1943) के उपरान्त हिन्दी के नये नाटक प्रकाश में आये | इस दिशा में सर्वाधिक महत्वपूर्ण नाटककार डॉ. लक्ष्मी नारायण लाल, नरेश मेहता, मोहन राकेश, मुद्राराक्षस, सुरेन्द्र वर्मा आदि हैं | नयी कहानी आन्दोलन के पुरस्कर्ता मोहन राकेश ने 'लहरों के राजहंस' 'अषाढ़ का एक दिन' तथा 'आधे-अधूरे' नाटकों की रचना करके इस दिशा में ऐतिहासिक कथावस्तु में भी मनोवैज्ञानिक दशा का सम्मिश्रण किया है | नये नाटकों की दृष्टी से 'अषाढ़ का एक दिन' में मल्लिका और अम्बिका की परस्पर प्रेम भावना को लेकर विरोध, कालिदास और विलोम में एक दूसरे के प्रति सहनिभुती अथवा विरोध, नये नाटकों का एक नया प्रयोग कहा जा सकता है | इसी प्रकार बुद्ध के जीवन पर आधारित नाटक 'लहरों के राजहंस' में राकेश ने एक नया आयाम जोड़ दिया है | अज्ञेय के उपन्यास 'नदी के द्वीप' की तरह राकेश की समीक्ष्य कृति लहरों के राजहंस का केन्द्रीय विषय – नारी का आकर्षण पुरुष को पुरुष बनता है और उसका विकर्ष उसे गौतम बुद्ध बना देता है | नये नाटक की सर्जना की दृष्टी से डॉ. लक्ष्मी नारायण लाल का नाटक 'मादाकैक्टस' प्रमुख माना जाता है | प्रणय के जिस सहज रूप का चित्रण अज्ञेय, मोहन राकेश, शिखर, एक जीवनी या लहरों के राजहंस में करते हैं-उसका एक दूसरा पहलू 'मादाकैक्टस' में अंकित हुआ है| कलाकार का वायवीय प्रेम सामान्य स्नेह सम्बंधो से अलग है, क्योंकि नये युग के अनुरूप उसमें नयी आत्मचेतना का विकास हुआ है | यद्यपि इसका एक विपरीत प्रभाव अरविन्द के चरित्र में भयंकर मोड़ है | क्योकि वह अपनी पत्नी सुजाता और मित्र तथा शिष्य आनन्दा के जीवन को निरर्थक बना देता है | अरविन्द के जीवन में पता नहीं कैसे यह भ्रम स्थान ले लेता है कि 'मादा कैक्टस' से संपर्क में आने पर नर कैक्टस सूख जाता है| जिसके

कारण वह पत्नी और मित्र दोनों का परित्याग कर देता है | डॉ. लाल का यह नाटक जीवन के परिवर्तित मूल्यों का परिचायक है जिसके पात्र 'अरविन्द' 'सुजाता' तथा 'आनन्दा' के जीवन में एक नये वैशिष्ट्य का समायोजन नाटककार ने किया है | सुजाता का स्त्रीत्व अरविन्द के कला सृजन में बाधक होता है जबकि सुजाता का सौन्दर्य उसके कला सृजन की प्रेरणा है | जिसकों पाने के लिए वह आनन्दा से प्रेम करता है किन्तु वह जीवित ही नहीं रह पाती | समीक्ष्य नाट्यकृति का सबसे प्रमुख अंतर्द्वंद है जो प्रयोगवाद और नयी कविता के प्रभाव के रूप में देखा जाता है | वह अंतर्द्वंद सुजाता के चरित्र के सही मूल्यांकन का आधार है | इसीलिए दद्दा सुजाता को अरविन्द से जोड़ना चाहता है | दद्दा कहता है- 'जिस सुजाता को तूने अपमानित करके त्यागा था वही सुजाता चारों ओर है हर स्त्री वही सुजाता है |"[2]

नयी कविता में विघमान यथार्थ बोध, वैयिक्त्कता तथा मानव की अपनी परिस्थितियों के समक्ष असहाय की तुलना में रचनाकार द्वारा किया जाने वाला संघर्ष 'नरेश मेहता' के 'सुबह के घंटे' में देखा जा सकता है | इस नाट्य कृति में मेहता जी ने व्यक्तित्व की सम्पूर्णता का चिंतन किया है | सुबह के घंटे का 'एमन' भी एक कलाकार है | उसके सामने सबसे बड़ी समस्या व्यक्तित्व के संघटन की है | डॉ. लाल के नाटक 'मादा कैक्टस' के अरविन्द की समस्या केवल नारी सौन्दर्य और प्रेम पर केन्द्रित है किन्तु 'एमन' अपने समय की राजनीति, सामाजिक व्यवस्था और नैतिकता की भी चिन्ता करता देखा जाता है | डॉ. राम स्वरुप चतुर्वेदी लिखते हैं कि- 'सुबह के घंटे' मूलतः समसामयिक राजनीतिक जीवन का एक सम्पृक्त चित्र है| परन्तु नाटककर की राजनीतिक दृष्टी इसकी पक्षधर नहीं है | स्वतंत्र राजनीति के भाव को ही एक व्यापक धरातल पर प्रस्तुत किया गया है | इस दृष्टी से सैद्धांतिक संघर्ष और कशमकश के बीच 'एमन; का चरित्र एक संघटित व्यक्तित्व है | वह कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य है पर पार्टी को उसने अपने चिंतन की स्वाधीनता नहीं बेच दी है| दक्षिणा उसकी मित्र प्रेयसि और पत्नी है | जिसके सम्मुख उसकी विनोद प्रियता और मुखर होती है| क्रन्तिकारी और समाजवादी होते हुए भी वह मूलतः मानवतावादी है|"[3] राजनीतिक प्रभाव और उसकी प्रतिक्रिया प्रयोगधर्मी नाटकों के कथ्य का एक महत्वपूर्ण भाग है जिसका प्रयोग करके 'नरेश मेहता' ने अपनी समसामयिक परिस्थितियों के अनुरूप जटिल से जटिलतर होते जीवन की समस्याओं का प्रभाव 'एमन' पर दिखाया है | एक संवाद में 'एमन' कहता है- गौतम के लिए जीवन दुःख था, मार्क्स के लिए वर्ग क्रान्ति और गाँधी के लिए उपवास, ये सब आंशिक सत्य हैं दक्षिणा |' गाँधी वादियों के अपने साँचे हैं तो कम्युनिष्टों के भी अपने साँचे हैं| इन्हें अपने ही अनुरूप लोग चाहिए | लोगों के अनुरूप नहीं होना चाहते | मार्क्स ने इतिहास के आधार पर नीति बनाई थी, ये नीति के माध्यम से इतिहास बनाना चाहते हैं |"[4] सत्य को सम्पूर्ण समय दृष्टी से देखना नयी-कविता की पहचान है |

लेखक नरेश मेहता नयी कविता के सजग सर्जकों में से एक हैं | इसी लिए अपनी मूल संवेदना का जिसमें तटस्थता, भावुकता तथा नये जीवन मूल्यों की खोज विघमान है, मेहता इस रचना में प्रस्तुत करते हैं | अपने व्यक्तित्व के अनुरूप 'नयी कविता' के रचनाकार अभिव्यक्ति की ईमानदारी अपनाते हैं | नरेश मेहता ने भी 'एमन' के व्यक्तित्व में इन्हीं विशेषताओ की तलाश की है | शीत युद्ध के प्रसंग में नरेश मेहता ने 'एमन' के विधेयात्मक दृष्टी को चिंतन की नयी दिशा के रूप में प्रस्तुत किया है |

नयी कविता के कवि और व्याख्याता लक्ष्मी कान्त वर्मा ने भी एक नये नाटक की रचना की है | 'आदमी का जहर' नामक यह नाटक 1957 ई. में प्रकाशित हुआ है | जिस प्रकार 'अतुकांत' की कविताओं में उन्होंने व्यंग्यात्मकता की शैली अपनायी है उसी प्रकार 'आदमी का जहर' के संवाद और क्रय में समसामयिक समस्याओं का दबाव देखा जाता है | डॉ. राम स्वरुप चतुर्वेदी लिखते हैं- 'मनुष्य के जीवन पर पशु की चिन्ता की जो प्रवृत्ति धीरे-धीरे आधुनिक सभ्यता में प्रवेश कर रही है उस पर एक तीखी किन्तु संयमित दृष्टी इस नाटक की मूल कथा स्थिति है | समूची कृति इसी विशिष्ट संवेदना पर आधारित है, जिसके विभिन्न पक्ष बड़े तीव्र वेश में अभिव्यक्त हुए हैं | मानवीय व्यक्तित्व में आस्था तथा निष्ठा उसकी प्रधान दृष्टी है, जो शरन के साथियों के सतही 'मानववाद' के संदर्भ में और भी स्पष्टता से उभरी है | तितिक्षा और आस्था का बड़ा प्रभाव पूर्ण समन्वय 'आदमी का जहर' में हुआ है |"[5]

लक्ष्मी कान्त वर्मा के इस नाटक के द्वारा नयी कविता और नये नाटक के अन्तर्सम्बंध को सम-सामयिक समस्याओ के प्रभाव के रूप में देखा जाता है | अन्य नाटककार जगदीश चन्द्र माथुर की नाट्य कृति 'पहला राजा' भी नये युग की समस्याओं से प्रभावित होने के कारण उल्लेखनीय है | डॉ. पाण्डेय विनय भूषण लिखते हैं- 'माथुर ने पौराणिक कथानक द्वारा स्वाधीनोत्तर भारत की समस्याओ पर आलोक डाला है | आधुनिक कथ्य की अभिव्यक्ति के लिए पौराणिक ऐतिहासिक कथावस्तु का चयन देश विदेश के महान नाटककारो द्वारा निरंतर किया जा रहा है | नाटककार ने पहला राजा के माध्यम से – पूर्व स्वतंत्रता काल की निरंकुश शासन पद्वति जनता के संघर्ष और उसके उपरान्त नेहरु द्वारा किये गए नव निर्माण और उसमें आयी बाधाओं का चित्रण किया है | पृथु जन आकांक्षाओं का प्रतीक है | जैसे नेहरु आजादी के बाद भारत देश के विशाल देश के नेता थे |"[6] 'पहला राजा' जगदीश चन्द्र माथुर की आधुनिक भारत की समस्याओं का एक प्रतिबिम्ब प्रस्तुत करता है |

इस नाटक के एक दृश्य में 'पृथु' उत्तेजित जनता की भीड़ में घुस जाते हैं और मुनिगण चिन्तित होते हैं | शुक्राचार्य का अनुमान है कि इससे 'पृथु' की शक्ति में वृद्धि होगी | इस नाट्य कृति में पात्र रूप में प्रयुक्त मुनियों के क्रिया कलाप 'नेहरु' 'गाँधी' 'पटेल' आदि से जुड़े नेताओं से तुलनीय हैं | आधुनिक जीवन में इन छुटभैयों की चाल अपने स्वार्थ के लिए चलती है जिस प्रकार नेताओं के दलबदल में स्वार्थ पूर्णता शोषण की प्रवृत्ति देखी जाती है उसी प्रकार 'पहला राजा' में ही कथानक तथा मंत्रियों के आचरण में आधुनिक राजनीति का प्रभाव विघमान है | मोहन राकेश, जगदीश चन्द्र माथुर, लक्ष्मी कान्त वर्मा और नरेश मेहता के अतिरिक्त भी 'भुवनेश्वर' धर्मवीर भारती तथा शम्भुनाथ सिंह ने भी नये युग की नयी समस्याओ से सम्बंधित नाटक लिखे हैं | धर्मवीर भारती का 'अंधायुग' 'गीति नाट्य' होने पर भी नयी कविता और नये नाटक के तुलनात्मक अनुशीलन के लिए सर्वाधिक चर्चित रचना है | अंधायुग का उल्लेख 'कविता' के रूप या 'नाटक' या 'काव्य' कहकर मूल्यांकन करना नहीं अपितु इसे नयी कविता के प्रभाव का एक उदाहरण कहा जा सकता है | रचनाकार के मन में समकालीन जीवन के घुमड़ते हुए बुनियादी सवाल युग के अन्धत्व का रूप धारण करते हैं | इस नाट्य कृति में कृष्ण और अश्वत्थामा परस्पर विरोधी पात्र के रूप में चित्रित किये गए हैं | नाटक का अन्य पात्र युयुत्सु समकालीन दुविधा ग्रस्त संघर्षशील मानव का प्रतीक हैं | कृष्ण को सम्बोधित करते हुए गांधारी अपने मन की वेदना व्यक्त करती है क्योंकि महाभारत में मारे गए उसके पुत्रों की मृत्यु का कारण कृष्ण ही हैं | गांधारी कहती है –

आस्था तुम लेते हो
लेगा अनास्था कौन ?

मूल रूप में आस्था और अनास्था का बार-बार टकराव, अश्वत्थामा, युयुत्सु और माता गांधारी की विषम वेदना तथा उसके द्वारा कृष्ण को प्रभु और पुत्र रूप में रखकर डॉ. धर्मवीर भारती इस समस्या से सीधी मुठभेड़ करते हैं | नयी कविता में जिस प्रकार आस्था और अनास्था का टकराव देखा जाता है उसी प्रकार कवि ने यहाँ हत्या कूटनीति षड्यन्त्र तथा युद्ध के घात प्रतिघातो को समाज अथवा पूरे विश्व की गम्भीरतम समस्या मानकर रचना में समाहित किया है | निराला ने इसी समस्या के लिए कहा था –

'रह गया राम रावण का अपराजेय समर'

डॉ. भारती भी 'अंधायुग' के पात्रो से संवादों के माध्यम से इन समस्याओं का चित्रण कर पाते हैं |

अन्धायुग की गांधारी के सम्बंध में डॉ. हंसराज त्रिपाठी लिखते हैं कि - 'गांधारी की कुण्ठा इतनी तीव्र है कि उसको मर्यादा, नैतिकता एवं आसक्ति बेमानी लगती

है | उसका विद्रोह ही त्वरित होकर उसे यह कहने के लिए विवश करता है कि संसार की पुरातन मान्यताएं अन्धी प्रवृत्तियों की उन पोशाकों जैसी है, जिनमें कटे कपडे की ऑखें बनी रहती हैं |'[7]

'नयी कविता' की प्रवृत्तियों का प्रभाव नयी कहानी, समकालीन उपन्यास, नयी-समीक्षा तथा नये नाटकों पर कम या अधिक विघमान है | नयी कविता की मूल प्रवृत्तियाँ जो समसामयिक साहित्य पर रेखांकित की गयी हैं उसके सम्बंध में डॉ. राम दरस मिश्र ने कहा हैं- आज के युग की सापेक्षता में जीवन के अन्य मूल्य भी बदले हैं | अभिजात्य से हट कर लघुता या सामान्यता की ओर दृष्टिपात करना भी आज की प्रवृत्ति है | लोक तंत्र की स्थापना में इस प्रवृत्ति की और भी विकसित होने का बल मिला है | व्यक्ति को समादर प्राप्त हुआ है | रूढी और सामूहिकता टूटी हैं और गतिशील सामाजिकता का विकास हुआ है, जिसमें व्यक्ति सामाजिक दायित्व, नैतिकता या आदर्श का निर्जीव अंश न होकर सजीव इकाई बन गया है |"[8] डॉ. मिश्र की इस मान्यता का समर्थन विभिन्न समीक्षकों ने साहित्य की विभिन्न रचनाओ के माध्यम से किया है | डॉ. मैनेजर पाण्डेय आधुनिक काल के परवर्ती चरण में लोकतंत्र की चेतना का विकास हिन्दी के प्रेम्चंद्रोत्तर उपन्यास में देखते हैं | डॉ. जगदीश गुप्त अपने द्वारा संपादित 'नयी कविता' में नये जीवन मूल्यों का अनुसन्धान करते हैं तो वी० डी० एन० साही नयी कविता में लघुमानव की प्रतिष्ठा करते देखे जाते हैं | प्रो० साही के लघुमानव का अर्थ असहाय या दलित अथवा उपेक्षित मानव नहीं हैं | उसे अपने स्व के प्रति गम्भीर लगाव है- अज्ञेय इसी 'सत्य' को इस प्रकार व्यक्त करते हैं-

स्थिर समर्पण है हमारा |
हम सदा से द्वीप हैं स्रोतस्विनी के
किन्तु हम बहते नहीं है |
क्योंकि बहना रेत होना है |
हम बहेंगे तो रहेंगे ही नहीं |"[9]

नयी कविता की दूसरी प्रवृत्ति व्यक्ति स्वातंत्र्य मानी जाती है | डॉ. शम्भुनाथ सिंह ने लिखा है – "व्यक्ति स्वाधीनता की परिणति काव्यात्मक अकेलेपन में हुई है | प्रेम और निर्माण की शक्तियों का काफी अपव्यय हुआ अथवा इनका इस्तेमाल पूँजीवादी व्यवस्था ने किया |"[10] डॉ. सिंह व्यक्ति स्वाधीनता की परिणति काव्यात्मक अकेलेपन में भले मानते हों किन्तु परिणति नहीं इसे प्रतिक्रिया अथवा व्यक्ति स्वातंत्र्य का अतिरेक कहना चाहिए | नयी कविता – युग का मनुष्य अतिरिक्त आत्मविश्वास से लबरेज हुआ है और आवेश या प्रतिक्रिया से आक्रान्त होने के कारण प्रायः चेतना से विरत होकर अर्द्ध विक्षिप्त अवस्था में 'अंधायुग' के 'युयुत्सु' की भाषा बोलता है | नई कहानियों के कई पात्र इसी प्रकार कुंठाग्रस्त होकर आक्रोशी मुद्रा में आचरण की सीमा पारकर दुराचरण करते देखे जाते हैं | नयी कहानियों के नारी-पात्रों में पुरुषों के प्रति एक विरोध है | किन्तु किसी अन्य पुरुष या पर-पुरुष को अपनाना 'लिव-इन रिलेशनशिप' का नया फैशन युवक और युवतियों में देखा जाता है उसी की छाप सामाजिक प्रभाव के रूप में सठोत्तरी कविता में भी छलक कर चली गयी है | स्वाधीनता प्राप्ति के उपरान्त देश वासियों के मन में स्वाधीनता को लेकर अनन्त कामनाये दिवा स्वप्न की तरह स्थान लेने लगी थी किन्तु उनकी 'आशा' को यदि कबीर वाणी का अध्यात्म कहा जाय तो यही 'नयी कविता' काल का 'कवि-सत्य है जो पहले 'काव्य सत्य' बनता है फिर उपन्यासों में नवीन यथार्थ बिध होकर नये जीवन मूल्यों का बीज बोता है |

नयी कविता के समसामयिक साहित्य पर पड़े प्रभाव को हम कई सन्दर्भों में 'अन्तर्सम्बंध' कहते आये हैं | जितनी पेचीदगियाँ आज के मनुष्य में आयी हैं उतनी इससे पहले किसी काल में किसी भी मनुष्य में नहीं देखी गयी | आदि काल में वह युग-चरण बन राजाओं की प्रशस्ति करने सुनने अथवा 'हाँ सरकार' कहकर प्रसन्न होता था | 'भक्ति काल' में वह 'बन्दा(भक्त)' बनकर हुकुम पिछाने सो एक हिजाने बन्दा कहिये सोई' हुआ | रीति काल की 'कला-कला के लिए' की अवधारणा में वह कुतूहल, जिज्ञासा, प्रणय, निवेदन, सौन्दर्य दर्शन अथवा कामिनी के 'शोभाही के भार का अनुमान लगाते-लगाते आधुनिक काल चला आया| जितना परिवर्तन आधुनिक काल में हुआ उसे केवल परिवर्तन न कहकर दिनकर ने क्रान्ति की संज्ञा दी है |

'संस्कृति के चार –अध्याय' में वे मुगलों के शासन की समाप्ति के बाद के काल खण्ड को आधुनिक काल कहते हैं जब कि डॉ. लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय इस काल को दो खण्डों में विभक्त करते हैं उनके अनुसार पहला खण्ड 'ब्रिटिश काल' है जिसका प्रभाव देशवासियों पर आधुनिकता के रूप में देखा जाता है | ब्रिटिश काल के तीन भेद- भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद युग के बाद प्रगतिवाद को नयी कविता (प्रयोगवाद) में समाहित करते हुए डॉ. राम विलास शर्मा इसका उद्भव प्रगतिवाद-युग से साढोत्तरी कविता के पूर्व तक मानते हैं | स्वाधीनता के पूर्व '1942-47' ई. का समय जिस प्रकार इतिहास के लिए चुनौती बना उसी प्रकार इस काल के साहित्य को भी एक चुनौती कहा जाता है किन्तु 'चुनौती' का जो अर्थ छायावाद-युग से पहले होता था, प्रयोगवाद और नयी कविता में वह एक आम-बात हो गयी | हर 'नेता' के 'संघर्ष करो हम तुम्हारे साथ हैं' कहने का लहजा अब साहित्य में भी आम आदमी का नया क्रन्तिकारी 'नारा' हो चुका है जो नयी कविता अथवा नये साहित्य पर राजनीतिक प्रभाव का वैविध्य है जिसे हम अर्थ व्यवस्था, सामाजिक मान्यता, नैतिकता और शिष्टाचार की सीमा से परे पहुच अन्य समस्याओं तथा अपने दायित्वों के संग्राम में स्पष्ट देख सकते हैं |

३. निष्कर्ष

नाट्य विधा का विकास कालांतर में अनेक रूपों और दिशाओ में हुआ है | यह विधा साहित्य की सबसे सशक्त विधा है | नाटक मानव जीवन में घटने वाली विभिन्न घटनाओ का ही प्रतिबिम्ब है | समसामयिक सामाजिक एवं राजनितिक परिस्थितित्यों का असर साहित्य सृजन पर अवश्य पड़ता है | इसी तरह साहित्य की विभिन्न विधाएँ भी एक दूसरे पर प्रभाव डालती है | उपरोक्त विश्लेष्ण से यह कहा जा सकता है की नयी कविता की काव्य धारा ने अपने काल के नाट्य रूपों पर व्यापक प्रभाव डाला है |

४. सन्दर्भ सूची

1. सेठ गोविन्ददास अभिनंदन ग्रंथ – सं० डॉ. नगेन्द्र (डॉ. खंडेलवाल का निबंध)
2. मादा कैक्टस – डॉ. लक्ष्मी नारायण लाल
3. समकालीन हिन्दी साहित्य: विविध परिदृश्य – डॉ. राम स्वरुप चतुर्वेदी
4. सुबह के घंटे – नरेश मेहता
5. समकालीन हिन्दी साहित्य: विविध परिदृश्य – डॉ. राम स्वरुप चतुर्वेदी – पृ. 119
6. हिन्दी नाटकों में प्रयोग तत्व – पाण्डेय विनय भूषण – पृ. 26
7. प्रसादोत्तर हिन्दी नाटकों में पात्र परिकल्पना – डॉ. हंसराज त्रिपाठी पृ. 325 (शो. प्र.)
8. हिन्दी कविता आधुनिक आयाम – डॉ. राम दरस मिश्र – पृ.116-117
9. नदी के द्वीप –अज्ञेय
10. आधुनिक कविता और मिथक – डॉ. शम्भुनाथ सिंह – पृ. 336